# प्लास्टिक, पॉलीथिन : सुविधा से संकट तक

**डॉ.कृपाशंकर तिवारी**

**आइडियल ग्लोबल सोशल एंड वेलफेयर आर्गेनाइजेशन**

हमने सुविधा, सजावट, सुन्दरता, आकर्षण और आडंबर के चक्कर में जाने अनजाने अनेक मुसीबतें मोल ले डालीं। आधुनिक के फेर में, कुदरत के सीधी साधे नियम भूलते गये। प्रकृति से यदि लो, तो वापस भी करना होगा। यह भूल गये। हमें प्रकृति ने एक संतुलित कुदरती व्यवस्था सौंपी थी। बेशुमार अनमोल खजाने भी। सुन्दर सरल सभी उपक्रम। पानी, हवा, भोजन, भूमि, जंगल से लेकर मन–प्राण आत्मा को निहाल कर देने वाली सारी व्यवस्थायें। हम धीरे धीरे क्रूर लालची, आक्रामक, हिंसक, विध्वंसक होते गये। कुदरत के शाश्वत नियमों को रौंदकर आधुनिकता के रंग और दंभ में डूब गये। समूची प्राकृतिक प्रणालियाँ हमने तहस नहस कर डालीं। प्राकृतिक संतुलन को चकनाचूर कर दिया।

इसी क्रम में विकास और सुविधा के नाम पर 50–60 वर्ष पहले पैकेजिंग मैटेरियल के रूप में कुछ पदार्थ आये। चमकीले रंगीन, लुभाने वाले। ये पॉलीमर्स थे। बहुत बड़ी रेंज में। एक से शुरू होकर हजारों हो गये। पॉलीथीन, प्लास्टिक, पैट, नाइलोन, रबर, पी.वी.सी. पॉलीयूरेथेन, बेकेलाइट जैसे हजारों उत्पाद। विभिन्न आकारों प्रकारो रंगों में। जीवन को कोई ऐसा क्षेत्र, प्रसंग या आयाम नहीं बचा, जहाँ इन उत्पादों ने अपनी घुसपैठ न बना ली हो। यहाँ तक कि हमारे नितांत अंतरंग गहरे क्षणें में भी। इनकी घुसपैठ बाजारों से लेकर, घरों और एक एक व्यक्ति तक है। आज समूची धरती, समुद्र, आकाश पाताल, जंगल, जलाशय, पर्वत शिखर हिमनद और रिहायशी क्षेत्रों की इंच इंच जमीन इनसे पटी है। "यूज एंड थ्रो" की संस्कृति और भोगवाद ने हालात को बद से बदतर बना दिया। इनका निर्माण प्राकृतिक संसाधनों से ही होता है, जो नष्ट हो रहे हैं, दूसरी ओर उपयोग के बाद इनका कचरा अब एक वैश्विक समस्या है। इसके कचरे के आँकड़ों में नही जाना चाहता। यह करोड़ों अरबों टनों का गणित है। मुसीबत तो यह है कि ये कचरा स्वतः नष्ट नहीं होता यानी बॉयो डिग्रेडेबिल नहीं है। महानगरो से लेकर गाँव गँवई तक, कुयें से लेकर तालाब नदी और समुद्र तक इस कचरे से लगातार पट रहे हैं।

इसके प्रबंधन और निपटान के कारगर तरीके नहीं है। निर्माण के अनुपात में निकले कचरे की मात्रा कई गुना है। पुर्नचक्रण की व्यवस्थायें अभी तक प्रभावी नहीं। प्लास्टिक पॉलीथीन उत्पादों का निर्माण कई लाख टन है किन्तु निपटान के कोई आँकड़े नहीं। अब यह बढ़ता कचरा अंबार समूचे परिवेश, पर्यावरण और आधुनिक विकास के लिये गंभीर चुनौती है।

इसको जला नहीं सकते, क्योंकि जलने से निकली टॉक्सिक फ्यूम्स के अनेक खतरे हैं। डाइआक्सन तो कैंसर जन्य है ही। इसको गाड़ने से भूमि की क्षमता, उर्वरता बिगड़ती है। शेष कचरा या तो गल जायेगा या उसको अलग–अलग कर पुर्नचक्रण कर सकते हैं। कहीं–कहीं इस कचरे को सीमेंट

कारखानों की भट्ठियों में या सड़कों के निर्माण में उपयोग के विकल्प दिये गये थे, पर मुझे लगता है इन पर व्यापक शोध और अध्ययन अभी भी अपेक्षित है। समूची दुनिया विकास के जिस तेज दौड़ते रथ पर सवार है, वह रथ कितना सुरक्षित है, देख लें, तो अच्छा है। रथ का पथ कितना दुर्गम हैं जाँच लें, तो ठीक होगा। इस रथ के पथ में यह अरबों टन प्लास्टिक पॉलीथीन कचरा पड़ा है। इस कचरे के घातक नतीजे दिखने लगे है। भूमि के बदलते उपयोग, डंपिंग साइट्स में लुप्त होती भूमि, समुद्री जलीय जीवन, नदियों की मौतें, शहरों में साल दर साल आती अस्थायी बाढ़ के दृश्य, लाखों दुधारू जानवरों की मौतों के अलावा दर्जनों भयावह स्थितियाँ का कारण यही कचरा हैं।

जरूरी है, विलंब न करते हुये इसके कारगर, दीर्घकालिक, समयबद्ध प्रबंधन योजना को आकार दें। सरकारों द्वारा लगाये गये प्रतिबंध लगभग कागजी और बेमानी साबित हुये हैं। प्रत्येक समस्या के हल हैं, लाजिमी है, इसके भी हैं। इन उत्पादो को चुटकी बजाते फेज आउट करना न तो व्यहारिक है, और न ही संभव ही। इन उत्पादों को उनके उपयोग, आकार प्रकार रंग, मोटाई, गुणवत्ता और फेज आउट में सुगमता के साथ उनके विकल्पों के प्रबंध करते हुये तीन चरणों में फेज आउट किया जाय। पहले चरण में बहुत पतले, रंगीन और हानिकारक पॉलीथीन उत्पाद जो एक बार प्रयोग के बाद फेंक दिये जाते हैं का निर्माण और उपयोग बंद हो। यदि उत्पाद यूज एंड थ्रो के बाद बिखरकर नालियाँ गटर चोक करते हैं, जलने पर टॉक्सिक गैंसे निकालते हैं, और गाड़ने पर भूमि ता नष्ट करते ही है साथ ही बीजों का अंकुरण रोकते हैं, और वर्षा को रिचार्जिंग से रोकते है। इन उत्पादों से जुड़े व्यवसायियों और कामगारों को वैकल्पिक उत्पादों के उद्योग से जोड़ने की पहल बेहतर होगी। ध्यान रहे वे विकल्प पर्यावरण के लिये घातक न हों। इन उत्पादों के इकाफेंडली विकल्प निःसंदेह वाँछित है। समूचे देश में लाखों टन कृषि, बागवानी कचरा निकलता है। धान की मूसी, पुआल, फूलों पत्तियों इत्यादि का कचरा अच्छा पैकेजिंग विकल्प हो सकता है। इस कार्य में देश दुनिया के वैज्ञानिक कृषि संस्थान, प्रयोगशालायें विश्वविद्यालय, आई.आई.टी. को शोध परियोजनायें में लेना चाहिये। पॉलीमर उत्पादों को इकोफ्रैंडली विकल्प पर शोध एक प्रेरक विषय हैं। शोध संस्थान आगे आयें।

इन उत्पादों के प्रबंधन और निपटान से जुडे प्रशासनिक पक्ष भी हैं। इनके उपयोग को क्रमशः रोकें। नियामक संस्थाये, कानून और प्रदूषण नियंत्रण, निगरानी संस्थायें सक्रियता से दायित्व निभायें। तत्काल पहल के लिये सभी रंगीन पॉलीथीन का निर्माण और बिक्री रूके। यह रूकेगी तो उपयोग स्वतः रूक जायेगा। रंगीन पन्नियों में भारी धातुओं जैसे क्रोमियम, लैड, निकिल, मरकरी के लवण होते हैं। यह रंगीन सजावट जानलेवा होती है। खान पान के गरम पदार्थ इन भारी धातुओं को शरीर में पहुँचा देती हैं। छोटे आकार की पतली पन्नियाँ और बारंबार पुर्नचक्रीकृत पन्नियाँ का निर्माण और प्रतिबंध इसी का हिस्सा हो।

पॉलीथीन, प्लास्टिक, पैट (पालीएथीलीन टेरे थेलेट) पानी की बोतलें, पॉलीमर पालीयूरेथेन उत्पादों के कप मग, गिलास, प्लेटस, थालियाँ, कटोरियाँ सुविधा के दृष्टि से तो डिस्पोजिबिल हैं पर इसका कचरा अब पर्यावरण को लिये मुसीबत है। पहले कदम में इन उत्पादों को धर्मस्थलों, स्कूलों,

कालेजों, अस्पतालों, जल भंडारो/स्त्रोतों और सामुदायिक केन्द्रों पर प्रतिबंध सराहनीय होगा। यह काम जन जागृति से प्रांरभ हो। कचरे के प्रबंधन, निपटान हेतु स्थानीय संसाधनों के अनुरूप योजनायें बनें।

इस कचरे के संग्रहण, विपणन, पुर्नचक्रण और प्रबंधन के साथ परिवहन से लाखें कचरा बीनने–जोड़ने वाले अबोध–उपेक्षित बच्चे जुडे है। वे स्थानीय स्तर पर कबाड़ियों के लिये काम करते हैं। ये बच्चे अत्यंत संक्रामक और खतरनाक जहरीले कचरे के अंबारों में घुसकर पॉलीमर कचरा इकटठा करते हैं। वे अनजाने ही, महज चंद रूप्यों के लिये पर्यावरण सुरक्षा के मित्र और दूत बनकर एक बड़ा काम और समाज का उपकार करते हैं। आवश्यक है इस पूरे व्यापार को संगठित क्षेत्र में लाया जाय। इन पर्यावरण दूतों का नगर/वार्ड स्तर पर विधिवत पंजीकरण हों। कबाड़खानों के समीप सुविधाजनक ढ़ंग से पुर्नचक्रीकरण इकाइयाँ लगें। इनमें अपनाई जाने वाली तकनीकें इकोफ्रैडली हों। रैग पिकर्स द्वारा कचरा संग्रहण, उनका उचित निपटान बेशक नगरों, महानगरो को अल्प वर्षा में ही वाटर लागिंग और बाढ़ से राहत देगा। कचरा निपटान में नीति विषयक, नियमन और निगरानी तथा कार्य निष्पादन विषयक संस्थायें अपने अपने कार्यों का बटवारा करे। इनका प्रभावी समन्वय चमत्कारी परिणाम देगा।

अस्पतालों के खतरनाक संक्रामक कचरे में भी पॉलीथीन प्लास्टिक घटक हैं। इस कचरे का संग्रहण, परिवहन, छँटनी और अंत में इन्सीनिरेशन के कुछ W. H. O. मानक हैं। जरूरी हो उनका पालन हो। म.प्र. क साथ भारत के अनेक राज्यों ने पर्यटन और सत्कार के क्षेत्र में व्यापक विस्तार और सफल प्रयोग किये हैं, पर्यटन सत्कार क्षेत्र को इन उत्पादों से पूरी तरह मुक्त कर दिया जाय। यह एक अद्भुत और अनुकरणीय पहल होगी। प्रत्येक जिलें में पर्यावरण सुरक्षा पर सक्रिय एक प्रतिष्ठित संस्था को जिले मे व्यापक जन जागृति का दायित्व देकर वर्ष में दो बार सुधार और परिवर्तन की समीक्षा कीा जाय। इस कार्य में पंचायते, इकोक्लब, महिला मण्डल, युवक मण्डल और अन्य सामाजिक संस्थायें भागीदारी दर्ज करें।

प्रत्येक नगर निगम, नगर पालिका, पंचायत पालीकचरा संग्रहण और निपटान हेतु स्थानीय संसाधनों आवश्यकताओं और इकट्ठा होने वाले कचरे की मात्रा के अनुरूप योजनायें बनायें क्रियान्वित करें, समन्वय करें और परिणाम दें। स्वच्छ भारत मिशन 2014–2019 के लक्ष्य प्रप्ति हेतु भी यह प्रयास बेहतर होगा। देश के प्रत्येक राज्य को इस दिशा में गंभीरता से नीतिगत और योजनागत रूप से पहल करनी होगी। मात्र सर्कुलर आदेश जारी करना तो केवल, औपचारिकता ही है, जिससे परिणाम मिलना संभव नही। प्रयास तो यह भी हो कि प्रत्येक आबाद क्षेत्र, जिले और प्रदेश का इसी आधार पर मूल्यांकन के साथ पर्यावरण सुरक्षा सूचकांक भी तय हो। म.प्र. के इंदौर और भोपाल इस दिशा में अच्छा काम करने की क्षमता और नियत रखते हैं। श्रम विभाग, टैक्स उगाहने वाले विभाग, पर्यावरण नियंत्रण विभाग तथा कानूनों को लागू करने वाले सभी विभाग चलताऊ ढर्रे से ऊपर उठकर इस उत्पादों के उपयोग, विपणन, प्रबंधन और अंत मे कचरे के निपटान पर निगरानी प्रभावी तरीके खोजें।

अंत में इस क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्यो के लिये एक जिले को पुरस्कृत करें, इससे दूसरे जिले प्रेरित होंगे। इसके साथ ही इस दिशा में अच्छे कार्यो के लिये रेटिंग तय हो। यह रेटिंग सरकारी और नराजनैतिक लफ्फाजी से परे होगी, तो समाज देखेगा ओर सराहेगा भी।

बेशक, विकास हमारा लक्ष्य है, होना भी चाहिये। यह विकास तभी सार्थक और टिकाऊ होगा जब हम अपने परिवेश, देश, पर्यावरण और पारिस्थितिक प्रणालियों को बचा सकें। पॉलीथीन प्लास्टिक की यात्रा सुविधा के साथ शुरू हुई, ध्यान रहे यह यात्रा अब संकट में समाप्त न हो। बस। इतना ही।

(प्रो. कृपाशंकर तिवारी)
भोपाल